ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(6): 254-255
www.allresearchjournal.com
Received: 18-02-2022
Accepted: 09-05-2022

पीयूष कुमार पाण्डेय
शोधार्थी संगीत, अ.प्र.सिंह वि.वि. रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
पीयूष कुमार पाण्डेय
शोधार्थी संगीत, अ.प्र.सिंह वि.वि. रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

मध्यकालीन संगीत का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (मुगल सम्राटों व शासकों के संदर्भ में)

पीयूष कुमार पाण्डेय

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2022.v8.i6d.9863

प्रस्तावना
राजनीतिक आन्तरिक विघटन के कारण मुगल काल के आरंभ के समय ऐसा रहा कि हम अपने अस्तित्व को सुदृढ़ नहीं रख सके। 1526 ई. में बाबर की विजय हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों में हुई और लगातार यह वंश भारतीय सत्ता को हस्तगत करता चला गया। इसी प्रकार अपनी सफलता के बढ़ते हुए कदम के साथ संगीत व संस्कृति भी लगातार प्रचलित होती चली गई।

बाबर के शासनकाल में संगीत (1526–30ई.)
बाबर को संगीत में अत्यन्त रूचि थी, वह संगीत का महान प्रेमी था, उसके दरबार में अनेक गायक–वादक थे। बाबर संगीत की महान् शक्ति को स्वीकार करता था। बाबर के काल में कल्लिनाथ प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए, जिन्होंने शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर की विस्तृत टीका लिखी। मुगल बादशाहों और ग्वालियर के कलाकारों के पारस्परिक सम्बन्धों सूत्रपात यहाँ से होता है।

हुमायूँ के शासनकाल में संगीत (1530–56 ई.)
बाबर का पुत्र हुमायूँ भी संगीत प्रेमी था, इसके दरबार में अनेक गायक–वादक हुए। हुमायूँ को संगीत का आध्यात्मिक रूप पसन्द था। अपने संकट के क्षणों में भी वह संगीत के द्वारा नवीन उत्साह प्रदान करता था। एक युद्ध के दौरान बैजूबावरा हुमायूँ के आश्रय में पहुँच गए थे, बैजूबावरा के गायन से प्रभावित होकर हुमायूँ ने युद्ध रूकवा दिया, बाद में बैजूबावरा फिर बहादुरशाह जफर की सेवा में चले गए थे। परन्तु हुमायूँ ने इस आचरण पर अत्यन्त खेद प्रकट किया था।

अकबर के शासनकाल में संगीत (1556–1605ई.)
इसी प्रकार अपनी सफलता के बढ़ते हुए कदमों के साथ 1556 ई. में अकबर के शासनकाल का प्रथम चरण तक आ पहुँचा। यह काल भारतीय संगीत, साहित्य, कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। अकबर के समय में ही संगीतज्ञ स्वामी हरिदास हुए, जो अपनी एकाग्रता और प्रतिभा के फलस्वरूप संगीत में अलौकिक अभूतपूर्व शक्तियों का सम्पादन कर सके। इनके शिष्यों में तानसेन, बैजूबावरा उल्लेखनीय है। इनके शिष्यों ने नवीन रागों और धुपद, धमार, तिरवट, तराना, चतुरंग आदि भिन्न–भिन्न गीत प्रकारों की रचना की। अकबर ने नवरत्नों में तानसेन ने अपनी प्रखर आभा द्वारा संगीत के प्रेम व शाश्वतता का संबल लेकर संगीत जगत में क्रान्ति उपस्थित की।
इस काल में ख्याल गायकी व धुवपद गायकी दोनों का प्रचार हुआ, तानसेन ने कई राग बनाए, जैसे– मियाँ मल्हार, दरबारी इत्यादि। इसी काल में संगीत तथा भक्ति काव्य के समन्वय की दृष्टि से भी यह यह काल महत्वपूर्ण रहा, जिसके द्वारा भारतीय संगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि का विकास व प्रचा हुआ।

जहाँगीर के शासनकाल में संगीत (1605–26 ई.)
अकबर के बाद जहाँगीर का शासन था। वह भी संगीत प्रेमी था, उसने गजल लिखी तथा उसे हिन्दी गीतों को सुनने का शौक था, परन्तु इसके समय में श्रृंगारिक संगीत अधिक विकसित हुआ। इसी काल में पण्डित सोमनाथ ने ''राग–विबोध' नामक ग्रन्थ लिखा, इस ग्रंथ में राग ध्यान भी दिए गए हैं। जहाँगीर सितारवादक भी थे। इनके समय में अकबर के काल की तरह ही हिन्द मुस्लिम संस्कृतियों का आदान–प्रदान होता था।

शाहजहाँ के काल में सगीत (1626–58 ई.)

जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र शाहजहाँ के शासनकाल में सगीत की रीति परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ। शाहजहाँ स्वयं भी एक मधुर एवं हृदयग्राही गायक थे तथा सितारवादन में प्रवीण थे। इस काल में धुपद शैली का प्रचार था पर साथ ही फारसी एवं अरबी ध्वनियों के मिश्रण से भारतीय संगीत में कई नवीन गीत प्रकारों का विकास हुआ।

शाहजहाँ के दरबार में संगीतज्ञों में दिरंग खाँ, लाल खाँ इत्यादि हुए, जिन्हें उन्होंने 'गुण समुद्र' की उपाधियों से पुरस्कृत किया था। इस काल में कत्थक नृत्य का प्रादुर्भाव हो चुका था तथा उसका प्रचार कृष्ण नृत्य के परिवर्तित रूप में दरबारी ढंग से हो रहा था। इसी समय के चतुरंग की प्रथा चली इसमें आलाप, गीत, तराना तथा पखावज के बोल आदि रहते थे। इस समय के रचित ग्रन्थों में मुख्य रूप से इस काल में नृत्य–गायन गणिकाओं के अधिक होने के कारण पतन की ओर अग्रसर होने लगा था। कलाकारों चरित्र भी संयमी न होकर विलासितापूर्ण हो गया था।

औरंगजेब काल में संगीत (1658–1700 ई.)

इसके बाद औरंगजेब राजा बना, इसका समय 1655–1700 ई. तक हा यह संगीत का महान् विरोधी था। अकबर, जहाँगीर व शाहजहाँ की भाँति औरंगजेब की प्रशंसा में भी अनेक धुवपद मिलते थे। अपने प्रारंभिक काल में औरंगजेब को संगीत से चिढ़ नहीं थी। 1664 ई. में 'फखरूल्लाह' द्वारा पाटण नामक ग्रन्थ लिखा गया, जिसमें औरंगजेब के संगीत प्रेम का वर्णन सा है। यद्यपि राज दरबारों से इस कला को प्रोत्साहन नहीं मिला फिर भी संगीत की चर्चा एवं प्रचार अवरूद्ध नहीं हुआ। औरंगजेब के शासनकाल यद्यपि बहत अतिश्योक्तिमय रहा पर संगीतशास्त्र के क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना हुई, जिसमें पण्डित भावभट्ट के तीन ग्रन्थ अनूप विकास, अनूपांकुश एवं अनूप संगीत रत्नाकर है।

औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् अलग–अलग छोटी–छोटी रियासतें बन गई। इन रियासतों के राजाओं में से जिनको संगीत कला से प्रेम था, उन्होंने संगीत कलाकारों को आश्रय दिया और इन कलाकारों का कार्य अपने आश्रयदाताओं का गुणगान करना मात्र रह गया था और ये कलाकार खानदानी कलाकार कहलाए जाने लगे और इसी से घराना परम्परा की नींव पड़ी।

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि मुगलों के आक्रमण से भारतीय संगीत में भी कई सोपान बदले किन्तु भारतीय संस्कृति की नींव गहरी व मजबूत होने के कारण आगे निर्मित होने वाले सभी भवन इस पर आधारित हैं। मुस्लिम सभ्यता ने भारतीय संगीत को एक ऐसा मोड़ दिया कि वह मुस्लिम युग में भारतीय संगीत के बाह्य ढाँचे में परिवर्तन हुआ और विकास भी हार कारण नए राग–रागनियों तथा गायिकीयों को जन्म मिला।

संदर्भ ग्रन्थ

1. राधेश्याम, (1974) – मुगल सम्राट बाबर, बिहारी हिन्दी पर – अकादमी, पटना, प्रथम संस्करण।
2. रिजवी, सैयद अतहर अब्बास, मुगलकालीन भारत बाबर (156,1550), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण व दूसरा संस्करण
3. मिश्रा, ज्योति – मध्ययुगीन संगीत का इतिहास।
4. उप्रेती, गिरिश चन्द्र, (1996), भारतीय संगीत बदलता परिदृश्य, राहुल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
5. संगीत मासिक पत्रिका, (जनवरी 2013), मुसलमान और भारतीय संगीत अंक।